तेजी ग्रोवर

एक दिन...

उत्सुक जब स्कूल से घर लौटा तो यूनिफॉर्म पहने-पहने ही चित्र बनाने बैठ गया। मैं उसे देखते ही समझ गई कि मैं ठीक समय उनके घर पहुँची हूँ। उत्सुक ने फिर जल्दी ही चित्र बनाना शुरू किया और मैं हमेशा की तरह बड़ी सावधानी से उसे चोरी-चोरी देखने लगी। लेकिन उस दिन उत्सुक ने मेरी चोरी पकड़ ली और वह मुझसे सख्त नाराज़ हो गया। "तेजी अम्मा," वह बोला, "जब आप बैठकर कुछ लिख रही होती हैं, तो क्या मैं आपको देखता हूँ?"

"नहीं, उत्सुक, आयम सॉरी, लेकिन मैं क्या करूँ? मैं देखना चाहती हूँ कि तुमसे ये चित्र कैसे बन जाया करते हैं?" उत्सुक ने थोड़ा सोचकर जो जवाब दिया वह यह था, "पहले मैं रंगों के बारे में सोचता हूँ कि आज किन रंगों से चित्र बनाना चाहता हूँ। जब मैं पेंटिंग करना शुरू करता हूँ तो अपने हाथों के पीछे-पीछे चलता रहता हूँ, बस।" पेंटिंग के बारे में मैंने इतनी विचित्र बात पहले कभी नहीं सुनी थी। तभी उत्सुक फिर बोला, "लेकिन आप खुद ही क्यों नहीं देख लेतीं? यह लीजिए शीट और ये रहे रंग। आप खुद ही बनाकर देख लीजिए कि चित्र बनाना कैसा होता है।"

मैंने शुरू किया, तुरन्त, जैसे बचपन से लेकर सैंतालीस साल की उम्र तक मैं इसी एक क्षण की प्रतीक्षा में थी। मुझसे चित्र जैसा कुछ बन रहा था और नौ साल का उत्सुक मेरी ओर न देखने की नाकाम कोशिश कर रहा था। लिहाज़ा पिछले चार साल से लगातार मैं अपने हाथों को चित्र बनाने दे रही हूँ, उन्हें सोचने दे रही हूँ, और उन्हें पूरी तरह से महसूस कर रही हूँ। लेकिन इस बीच उत्सुक का बहुत-सा समय स्कूल में या होम-वर्क करने में निकल रहा है। जिससे मेरे मन में दुख पैदा होता है।

नदिया जैसे बहें

जिसके राज में रहें
ना, उसके जैसी कहें
ऊँट बिलाई ले गई
ना, हाँजी हाँजी कहें
पर्वत से नीचे को
नदिया जैसे बहें

रमेशदत्त दुबे

प्रभात

मियाँ जी-चिंया जी

साबुनदानी, मसालेदानी, चायदानी, पानदानी, खानदानी, यह सब तो सुना होगा पर मुहावरेदानी कभी न सुना होगा। जैसे मसालेदानी से मसाले निकलते हैं, वैसे ही मुहावरेदानी से मुहावरे निकलते हैं। हमारे मोहल्ले के मियां जी और चिंया जी की ज़बान ज़रा खुल जाए तो समझिए मुहावरेदानी का ढक्कन खुल गया। एक सुबह अम्मी जान ने मुझे अण्डे लेने भेजा। रास्ते में ज़रा दूर बीच सड़क पर मियां जी और चिंया जी की मुहावरेदानियों के ढक्कन खुले पड़े थे। और उससे मुहावरे निकल-निकलकर हवा में उड़ रहे थे। अब जो वाकया हुआ सो सुनोः

मियां जी चिंया जी पर चिंघाड़ रहे थे, "अन्धे हो! दिखता नहीं क्या? साइकिल ऊपर चढ़ाए जा रहे हो, चढ़ाए जा रहे हो?"

चिंया जी भी दहाड़ रहे थे, "आसमान सर पर न उठाओ मियां। साइकिल चढ़ा ही देता तो इतना आग बबूला न होते।"

मियां जी भी अब तैश में थे, "तो भई चिंया, क्या राह चलते किसी राहगीर को सरे राह कुचल डालोगे? ये तो वही मिसल हुई ...क्या कहते हैं वो उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।" चिंया जी के सब्र का घड़ा भर गया। उन्होंने नहले पर दहला फटकारा, "देखिए मियां जी, इस तरह आप नाकुछ-सी बात को हवा दे रहे हैं। बात अब हद से आगे बढ़ चुकी है, पानी सर से गुज़रने लगा है। मैं अब अगर अपनी पर आ गया तो आप जो तूफान मचा रहे हो कहीं दीयों में न दिखोगे।" मियां जी बोले, "ललकारो मत ललकारो मत चिंए। खुदा कसम मेरा खून खौल गया तो कोहराम मच जाएगा। भलाई इसी में है कि अब तुम रफूचक्कर हो जाओ।"

चिंया जी ने ऐसी धमकी भरे बाज़ार पहली बार सुनी थी। भीड़ अलग से जमा हो गई थी। चारों ओर नज़र घुमाने के बाद बोले, "मैं कहता हूँ दफा हो जाओ। गज़ब हो जाने वाला है यहाँ। कयामत आ जाने वाली है।"

इतने में एक पुलिसवाला सबको हड़काता हुआ उधर आया, "ऐ हटो सब। हटो फौरन। क्यों बवाल मचा रक्खा है? कौन बखेड़ा कर रहा है इधर?"

एक ही पल में सारा नज़ारा बदल गया। सब लोग सुरक्षित जगहों की ओर लपके। मैं भी आधा सेर टिण्डे लेकर घर पहुँचा। भूख लगी थी। घर पहुँचते ही खाने बैठ गया। मगर खाने की जगह अम्मी जान ने गरमा-गरम डाँट खिलाई, "अरे बेवकूफी के पुतले, तुझसे अण्डे मँगवाए थे न कि टिण्डे।"